मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मणों का बृज में आगमन

कब ? कहाँ ? कैसे ?

मिथिला नरेश महाराज कामेश्वर सिंह- दरभंगा

-: लेखक :-

रघुवीर सहाय शर्मा

(एम.ए. (हिन्दी, अर्थ.) बी.एड., सां.रत्न)

राष्ट्रीय संयोजक- राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा

सौजन्य- मैथिल ब्राह्मण सन्देश, उ.प्र.

वंश परम्परा (रघुवीर सहाय शर्मा)

प्रवर- त्रि (वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर) (वशिष्ठ वंशीय शक्ति के पुत्र), गोत्र-पाराशर, शाखा-कौथुमी, सूत्र-गोभिल, वेद-सामवेद, आस्पद-मिश्र, शिखा-वाम, पाद-वाम

1301 ई0	श्री उमापति मिश्र	सुरगणे पिरोखर (बिहार) **बीजीपुरूष**
1556-1580 ई0	श्री मधुसूदन मिश्र	आगरा (शहजादी मण्डी)
1580-1680 ई0	चार पीढ़ी अज्ञात	आगरा (शहजादी मण्डी)
1680-1750 ई0	रायजीत मिश्र	लोहबन (मथुरा)
1750-1800 ई0	मतीराम मिश्र	नानऊ (अलीगढ)
1800-1856 ई0	सम्पत्तिराम	खान आलमपुर (दादों)
1856-1900 ई0	दुलीचन्द	दुलीचन्दपुर

दुलीचन्द मिश्र (दुलीचन्दपुर)

- जाहरमल मिश्र (सतोया)
  - पीतम्बर, हेतराम
- खेमकरन शर्मा (रहमापुर) ✕
- हरप्रसाद शर्मा (रहमापुर)
  - होतीलाल शर्मा (ज्वालापुरी)
    - सत्यदेव
      - विक्की
      - संतोष
    - वेदप्रकाश
      - रौबी
      - रौकी
      - सोमू
      - अतुल
      - राहुल
    - जतीशकंर
      - बौबी
      - मनोज
      - दीपक
  - धनीराम शर्मा (ज्वालापुरी)
    - रामबाबू
      - अनिल
      - मुकेश
    - चन्द्रदत्त
      - राहुल
  - लाल सिंह (ज्वालापुरी)
    - लालता प्रसाद
      - हेमू
      - शेखर
      - छोटू
  - रघुवीर सहाय शर्मा (सासनी)
    - खगेश चन्द्र शर्मा (अलीगढ़)
      - लोकेश चन्द (गाजियाबाद)
        - माधव शर्मा
      - देवेश शर्मा (बम्बई)
    - डा. उमेश चन्द्र शर्मा (अलीगढ़)
      - कुमार संचित
    - कामेश चन्द्र मिश्र (आगरा)
      - प्रद्युम्न मिश्रा
- नन्दकिशोर शर्मा (सतोया)
  - ख्यालीराम

सामर्थ्यवान बन्धु पुस्तक की 500 या 1000 प्रति छपवाकर सभी को बांटे, हमारी अनुमति है।

प्रकाशकीय एवं अनुशंसा

(प्रथम संस्करणः 1974): श्री भूदेव प्रसाद मिश्र हाथरस ने छपवाकर बटंवाया। श्री फूलबिहारी शर्मा रीडर ए.एम.यू. खिरनी गेट अलीगढ़ ने अनुशंसा में लिखा कि समाज के इतिहास की जानकारी प्रत्येक मैथिल ब्राह्मण को होना आवश्यक है, तभी वह अन्य लोगों को समुचित उत्तर दे सकेगा। डा0 वेदराम शर्मा ने लिखा है कि इतिहास वह विद्या है, जिसके अभाव में देश, समाज और सभ्यता समाप्त हो जाया करती है, जैसे सिंधु घाटी तथा यूनान की सभ्यता आज नहीं रही।

(द्वितीय संस्करणः 1995): राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा के जिला अध्यक्ष श्री जे0सी0 सारस्वत ने पुस्तक को पढ़कर सभी ब्राह्मणों में बांटने की इच्छा प्रकट की तो मेरे पास पुस्तकें समाप्त हो जाने के कारण इसे स्वयं छपवाकर सभी ब्राह्मणों में निःशुल्क बंटवाया। इसकी अनुशंसा में डा0 राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी डी0लिट विभागाध्यक्ष डिग्री कॉलेज कोसी ने लिखा है कि इस प्रकार की पुस्तकें सार्वजनिक महत्व की हैं, इनको सीमा में बांधकर नहीं रखा जाना चाहिये।

प्रकाशक एवं सम्पादक

(तृतीय संस्करण)

मैथिल ब्राह्मण सन्देश मासिक पत्रिका के दिसम्बर अंक में ब्रज में मैथिल ब्राह्मण कब, कहाँ, कैसे पुस्तक का अंश लेख पढ़कर पुस्तक प्राप्त करके सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हुई। पुस्तक के लेखक श्री रघुवीर सहाय शर्मा मैथिलेन्दु जी से सम्पर्क किया तो पता चला कि पुस्तक समाप्त हो गई है। मैंने पुनः प्रकाशन का प्रस्ताव शर्मा जी के सामने रखा तो उन्होंने संशोधित कर इस तृतीय संस्करण को छपवाकर बांटने की अनुमति दे दी। मैंने अपने मित्र चन्द्रपाल भारद्वाज आगरा से इस कार्य के लिये परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष सहयोग करने के लिये कहा। इस प्रकार यह पुस्तक मेरे प्रकाशन एवं श्री चन्द्रपाल भारद्वाज को सम्पादन में छपकर आपके पास पहुंच रही है। बृज में मैथिल ब्राह्मण समाज की ऐतिहासिक जिज्ञासा को यह भली प्रकार आपको देगी, इस आधार पर आप किसी को भी समाज की प्रमाणिकता सिद्ध करने में समर्थ होंगे। हमारा आपसे अनुरोध है कि स्वयं पढ़कर किसी दूसरे को पढ़ने को दे और क्रम आगे बढ़कर समस्त समाज तक पहुँच जाये।

आपके अपने

चन्द्रपाल भारद्वाज, प्रा0 कार्यकारिणी सदस्य
राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा उ0प्र0
मो: 7017565606

सत्यप्रकाश शर्मा, संरक्षक मैथिल ब्राह्मण संदेश
मो: 9219636927

आवश्यक आवश्यकता

5 शास्त्र लिखने वाले, शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में हराने वाले मैथिल ब्राह्मण समाज को भारत ही नहीं विश्व में श्रेष्ठ माना जाता है, किन्तु इतिहास के अभाव में ब्रज में प्रवासित इस समाज के विषय में जनता में भ्रम की स्थिति है। श्री रघुवीर सहाय शर्मा ने भ्रम निवारण के सम्बन्ध में एक अच्छा प्रयास किया है, मैथिली ही नहीं अन्य हिन्दू समाज भी इसके माध्यम से वास्तविकता की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। मैं श्री शर्मा जी के प्रयास की सराहना करता हूँ। इस पुस्तक को सम्पूर्ण हिन्दू समाज विशेष रूप से ब्राह्मणों में बांटना सामाजिक सदभाव उत्पन्न करेगा, ऐसी मेरी धारणा है। मैं श्री शर्मा जी के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

रामबाबू शर्मा
कार्यकारी जिला अध्यक्ष, राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा,
जनपद अलीगढ़

आत्म–कथन

सन् 1962 ई0 में माननीय भूदेव प्रसाद मिश्र द्वारा ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन आगरा का सदस्य बनाया गया। 1972 में तहसील हाथरस की अध्यक्षता का भार हाथरस अधिवेशन में दिया गया, उसी में डा0 फूल बिहारी शर्मा रीडर (ए0एम0यू0) अलीगढ को प्रान्तीय अध्यक्ष चुना गया, उनके सानिध्य में मैथिल ब्राह्मणों का इतिहास पढ़ने को मिला। पिता श्री हरप्रसाद शर्मा पाण्डित्यकर्मी से ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड, जाति भास्कर आदि ग्रन्थ पढ़ने को मिले। मैंने देखा कि विद्वता से भरपूर मैथिल ब्राह्मण समाज का ब्रज क्षेत्र में वह सम्मान नहीं है, जो अन्य ब्राह्मणों का है। कारण ज्ञात करने पर पता चला कि ब्रज में मैथिल ब्राह्मणों के आने के इतिहास की आम जनता तथा स्वयं मैथिल ब्राह्मणों को जानकारी नहीं है। इस विषय में कुछ लिखने की जिज्ञासा ने ''बृज में मैथिल ब्राह्मण कब कहाँ कैसे'' को मूर्त रूप दिया। सासनी के के0एल0 जैन के हाल में 1974 में ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन का आयोजन विद्यापति दिवस के रूप में कराया और पुस्तक को निःशुल्क बांटा। सम्मेलन के मुख्य अतिथि डा0 राजेन्द्र कुमार रंजन चतुर्वेदी डी0लिट मथुरा ने पुस्तक का विमोचन किया और भूरि–भूरि प्रशंसा की और कहा कि मथुरा के मैथिल ब्राह्मण डा0 एम0पी0 शर्मा एवं डा0 ताराचन्द्र शर्मा प्रधानाचार्य से मेरे घरेलू सम्बन्ध हैं, ये बातें उन्होंने कभी नहीं बताई। इससे इतिहास अनभिज्ञता की मेरी बात सही सिद्ध हुई। सन् 1995 में राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा अलीगढ़ से जुड़ने पर इस पुस्तक का प्रकाशन आज के जिलाध्यक्ष श्री जे0सी0 शर्मा ने कराया और अन्य सभी ब्राह्मणों में निःशुल्क बंटवाया।

इस तीसरे संस्करण की आज भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी पहले थी। मैथिल ब्राह्मण सन्देश के संरक्षक सदस्य श्री सत्यप्रकाश शर्मा एम.एस.सी. उद्योगपति आगरा ने इस पुस्तक को प्रकाशित कर

वितरण की इच्छा प्रकट की तो मैंने इसको संशोधित करके छपवाने की अनुमति दे दी। राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा का राष्ट्रीय संयोजक होने के नाते भी मेरा दायित्व बनता है।

vr% ;g iqLrd rhl jhcki vkidsdj deyksesa igqp jghgSA vk”kk gSefFky czã.k ghugha Hkh fgUnw ekt dsykx bls i<+a vkSj ctz dsefFky czã.kksa dsfo’k; esa izekf.kd tkudkjh iz’kr djsaA iqLrd i<+dj vUr; dksnsa vFkok Ni okdj lekt esa ckaVsa] esjh vuqefr gSA

cUkqvksa lekt lsoh dslkFk esa ,d dfo rFkk lkfgR;dkj Hkh gwA 1950 lsdforkys[ku dj 10 iqLrdsa Ni pqdh gSa] ,d iqLrd vlkq Hk; kmfu]nqxkZ lrlrhdsnksgk pkSikbZ vuqokn dks dsbZ lj dkj usizdk”kd ls [kjhndj dsbZ fMLVªdyVs kaesaHkst k gSA dgkfu;ka xhr fy[kuk esjh fo|k gSA ctz Hkk’kk dh nksiqLrdsafojg “kr d ,oa dkO; ukfVdk Ni pqdh gSA ctz dsykdxhr Ni usdsbUrt kj esagSA

esjsbl y[ku dk; Z esa[kx”k “kekZ,l -bZ] Mk0 me”k “kekZ ih- bZ,l -rFkk dke”k “kekZ LV”ku v/kh{kd dk lg; kx l jkguh; gSA lHkh iqo/kqvksa}kjk ukrhyksa”k bUlhfu; j] nso”k esa j] lfp r ,e-ch-,-] izHkq] iUrhek/ko vkSj izUkd ,oa dek= ukfrufgf’kZk dksgkfnZd vk”khokZn dslkFk esjh lj kguh; lsok dj dseq>s86 o’kZesa Hkh lekt lsok djusdk iz sR kgu gh nsrs jgrsgSA fgekuhrFkk fofn;k iks k cgqvksa dks vk”khokZn dslkFkA

vkidk

रघुवीर सहाय शर्मा

कवि एवं साहित्यकार

पूर्व विभाग उपाध्यक्ष– विश्व हिन्दू परिषद

संरक्षक मैथिल ब्राह्मण महासभा

तथा मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका

एवं राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा उ0प्र0 (अलीगढ़)

मो: 8218721824

ब्राह्मण उत्पत्ति

मनुष्य में जब सभ्यता का विकास हुआ, तब आश्रम व्यवस्था बनाई। आश्रम में सभी व्यक्ति सभी काम करते थे। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग मिलकर एक मनवन्तर होता है। प्रत्येक मनवन्तर का एक मनु होता है, ग्यारह मनु बीत जाने पर बारह वें वैवश्वत मनु ने वर्ण व्यवस्था समाज को सुचारू रूप से चलाने हेतु बनाई। मनुस्मृति के आधार पर चार वर्ण कर्मानुसार बनाये। समाज में शिक्षा दीक्षा देने, यज्ञादि कराने और धार्मिक कार्य करने वालों को ब्राह्मण नाम दिया, जो आश्रम की देखभाल, रक्षा का भार संभालते थे, उन्हें क्षत्री और जो खेती, व्यापार, लेनदेन का कार्य करते थे, वे वैश्य कहलाये और जो समाज में सेवा कार्य करते थे, उन्हें शूद्र वर्ण बनाया गया। चारों वर्णों में कोई भेदभाव, छूआछूत नहीं थी। प्रारम्भ में यह व्यवस्था कार्य आधारित थी। बाद में शास्त्र, पुराण, उपनिषद काल के बाद ब्राह्मण ग्रन्थ काल (शतपथ, एतरेय, तेत्तरीय आदि) में आकर यह जन्म आधारित हो गई और तभी से भेदभाव प्रारम्भ हुआ और जाति प्रथा प्रचलित हो गई। इसका कारण कार्य विशिष्टता उत्पन्न करना रहा होगा। एक कार्य वंश परम्परा से करते रहने से विशिष्टता आती है, अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती है। हजारों जाति वाले हिन्दू समाज में पहचान सुगमता से होने के लिये भी जातिप्रथा एक कारण हो सकता है। जीन्स थ्योरी का भी इस कार्य में पर्याप्त प्रभाव रहा होगा। जीन्स की समानता ने जाति को जन्म दिया होगा।

आरम्भ में जाति प्रथा समाज में लागू करने का उद्देश्य अर्न्त तथा वाह्य समागम् के लाभ प्राप्त करना ही रहा होगा, जैसा कि प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन से पता चलता है कि जो व्यक्ति अपने कर्म से पतित हो जाता था, उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था और जो श्रेष्ठ कर्म करने लगता था, उसे उन्नति दे दी जाती थी। श्रीमद्भागवत के आधार पर विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे, बाद में उनका ब्राह्मण वंश हुआ। मनु के पुत्र क्षत्रिय, दिष्ट का पुत्र वैश्य, प्रबध ब्राह्मण गुरू गाय वध के दोष से शूद्र

हुआ। भृगवंशीय अंगीरा के पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों में हुए। जातिप्रथा के आधार पर यह सर्वसम्मत है कि ब्राह्मणजाति प्रारम्भ से ही कर्मों के आधार पर श्रेष्ठ मानी जाती रही। वर्णव्यवस्था के अनुसार पूर्ववर्ती समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चार ही वर्ण थे। इनमें शुद्ध कर्म वाली वैश्य, क्षत्रिय कन्या का वरण ब्राह्मण कर सकता था। ऐसे अनेक प्रमाण हैं। सुमेधा ऋषि द्वारा कथित एवं श्रुति, स्मृति के आधार पर श्रीकृष्ण द्वारा निर्मित ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के श्लोक 8 द्वारा **''सृष्टि आरम्भे ब्राह्मणस्य जातिरेका प्रकीर्तिता।''** श्लोक 13 द्वारा **'पार्श्वत्देशभेदाद्द्विया अभवत। गौड़ द्रविण भेदेन तर्थो भेदा दशस्मृता।।'**

इसका अर्थ है कि सृष्टि के आरम्भ में ब्राह्मण नाम की एक ही जाति थी। बाद में विन्ध्याचल पर्वत के उत्तर के ब्राह्मण गौड़ तथा दक्षिण के द्राविण दो भेद हुए। दो से ही ब्राह्मण के दस भेद हुए हैं। ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड के श्लोक 15 के द्वारा–

''कर्णाटिकाश्च तेलंगा, द्राविणा, महाराष्ट्रा का।
गुर्जराश्चेति पंचैव, द्राविणाविन्ध्य दक्षिणा।''

श्लोक 16 के द्वारा–

''सारस्वता, कान्यकुब्जा, गौड़, उत्कल, मैथिला।
पंच गौड़ इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तर वासिनः।।''

इसका अर्थ है कि विन्ध्याचल के दक्षिण में कर्णाटक, महाराष्ट्रीय, तेलंगाना (मद्रासी), गुजराती तथा द्राविण ब्राह्मणों का निवास है। विन्ध्याचल के पूर्व उत्तर भाग में सारस्वत सरयूनदी के आसपास, कान्यकुब्ज कानपुर तथा कन्नौज क्षेत्र में, उत्कल उड़ीसा में तथा मैथिल मिथिला (बिहार) तथा पश्चिमी भाग में गौड़ ब्राह्मणों के भेद हुए। ये सतयुगी हैं। बाद में अन्य अनेक ब्राह्मण पहले 84 प्रकार के फिर 108 प्रकार के और आज 2000 प्रकार के ब्राह्मण हैं। सभी ब्राह्मण 24 ऋषियों की सन्तान हैं। सभी ब्राह्मण आज भी अपने–अपने क्षेत्र में पूज्यनीय हैं। इस कारण छोटे, बड़े का भेद मानना मूर्खता है। ऐसी बाते वे ही लोग करते हैं, जिनको इस विषय का ज्ञान नहीं है और ना ही अपने विषय में जानकारी है।

ब्राह्मण उपजातियाँ

ब्राह्मणों का उपवर्गीय विभाजन 9वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ। आदि शंकराचार्य दक्षिणी भारत में पैदा हुये, अल्प आयु में ही विद्वता प्राप्त की। तदुपरान्त सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया तथा जिस प्रान्त में गये, शास्त्रार्थ में वहाँ के ब्राह्मणों को हराया और उस प्रान्त के नाम पर ही वहाँ के ब्राह्मणों की उपजाति बना दी, जैसे महाराष्ट्र में महाराष्ट्रीपन, गुजरात में गुजराती, उडीसा में उत्कल, मिथिला में मैथिल, कानपुर कन्नौज क्षेत्र में कान्यकुब्ज, सारस्वत प्रदेश (राजस्थान) में सारस्वत, सरयू नदी के पास सरयूपारी आदि नाम प्रान्तों के आधार पर रख दिये। किन्तु आपस में भेदभाव उस समय भी नहीं था। ब्राह्मण काल में भेदभाव चरम पर पहुंच गया। कच्ची पक्की, पहले पीछे, पत्तल उठाने, मृत्युभोज में पहले कौन आदि अनेक झगड़े होने लगे।

आज सत्ता ने तथा विज्ञान ने सभी ब्राह्मणों को एक मंच पर आने के लिये विवश किया है। सभी राजनैतिक पार्टियां जाति के आधार पर ही अपने प्रतिनिधि चुनती हैं। जबसे जीन्स थ्यौरी विज्ञान ने विकसित की है, तबसे ब्राह्मण एकता का आधार सबल हुआ है। सभी ब्राह्मणों के जीन्स में समानता पाई जाती है। संस्कारों के आधार पर भी सभी ब्राह्मणों में समानता है जैसे जनेऊ संस्कार। समय परिवर्तन के आधार पर अर्न्तउपजातीय विवाह भी होने लगे हैं। पहचान सुगमता से होने के लिये भी जाति प्रथा एक कारण हो सकता है। जीन्स थ्योरी को भी इस कार्य में पर्याप्त प्रभाव रहा होगा। जीन्स की समानता ने जाति को जन्म दिया होगा।

समय की मांग है कि आज सभी ब्राह्मण एक हों, इसके लिए बीज मंत्र है कि सभी अपने अपने संगठन चलायें, रचनात्मक कार्य करें, किन्तु समाजहित में एक रहें और ब्राह्मण समाज का कोई कार्यक्रम हो, उसमें सभी सम्मिलित हों, सभी संगठन सभी को बुलायें और स्वयं भी दूसरों के संगठन में जायें। सभी संगठन की एक समन्वय समिति हो। जिसका संचालक किसी सर्वमान्य व्यक्ति को बनाया जाये, जो सभी संगठनों उपजातियों में समन्वय का काम करें। सदस्यता अपनी अपनी अलग हो, चंदा अलग हो, किन्तु कार्य पद्वति एक हो।

मैथिल ब्राह्मण उत्पत्ति

बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत, भविष्य पुराण भाग–3, विष्णु पुराण आदि ग्रन्थों में तथा श्री हरिकृष्ण शर्मा महाराष्ट्र (औरंगाबाद) निवासी गौतम गोत्रीय गुर्जर ब्राह्मण द्वारा अनुवादित वृहज्योतिषार्णव ग्रन्थ के छटे मिश्र स्कन्ध के सोलहवें अध्याय में ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के 48 वें प्रकरण श्लोक 4 से 14 तक मैथिल ब्राह्मणों की उत्पत्ति संक्षेप में इस प्रकार कही गयी है–

श्री काशी देश के ईशान कोण में अंगदेश के समीप मिथिला देश है। यह विहार प्रान्त का उत्तरी भाग है। नेपाल के 4, बिहार के 8 वृहत जिले हैं। विष्णु पुराण के आधार पर 24 योजना लम्बाई में तथा 16 योजन चौड़ाई में है। पुराण में इसके जनक, वैदेही तिरहुत आदि 12 नाम दिये हैं। शतपथ ब्राह्मण के आधार पर यहां वैदिक संस्कृति का प्रसार ऋग्वेद काल के उपरान्त हुआ।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार कथा है कि इस देश में एक सूर्यवंशी राजा निमि थे, उन्होने एक बार एक यज्ञ कराना चाहा और कुलगुरू वशिष्ठ को सूचना भेजी। वशिष्ठ जी उनसे प्रतीक्षा करने की कहकर इन्द्र का यज्ञ कराने चले गये। यज्ञ का मुहूर्त निकलते देख राजा निमि ने पाराशर, शाण्डिल्य, वत्स, भारद्वाज, गौतम आदि 15 ऋषियों को बुलाकर यज्ञ कराना आरम्भ कर दिया। इनमें गौतम ऋषि मुख्य ऋत्विज माने गये।

जब वशिष्ठ जी लौटे तो क्रोधित होकर राजा को श्राप दे दिया कि तुम्हारा शरीर न रहे। राजा तुरन्त मर गया। ऋषियों ने देवताओं की आराधना की और प्रार्थना कर राजा को जीवित करा लिया। जीवित होकर भी राजा ने शरीर क्षण भंगुर समझ पुनः शरीर त्याग दिया। ऋषि लोग दुखी हुए तभी आकाशवाणी हुई कि राजा के शरीर का मंथन करने से एक दिव्य

पुरूष उत्पन्न होगा जो तुम्हारा भरण पोषण करेगा। ऋषियों ने राजा निमि के शरीर का मंथन किया, उससे एक राजकुमार मिथि पैदा हुआ, जिसने मिथिला का राज्य किया तथा यज्ञ कराने वाले 15 ब्राह्मणों को दान देकर राज्य में बसाया, जिनमें से गौमत ऋषि की संतान शतानन्द हुई और इन्हीं 15 ऋषियों की संतान मैथिल ब्राह्मण है। शरीर मंथन के कारण उत्पन्न राजकुमार मिथि (मैथिल) तथा बिना शरीर के हुआ, इसलिए विदेह और स्वयं पैदा हुआ, इसलिए जनक कहलाया। इसी कुमार ने मिथिला राज्य बसाया और गौतम जी के कारण गौतम गोत्रीय कहलाया। तभी से मिथिला में मैथिलों का राज्य चलता रहा। इस वंश का अन्तिम राजा गौतम बुद्ध से सदियों पूर्व कलार जनक था। जनक यहां के राजाओं की उपाधि थी। इसके उपरान्त मिथिला में नन्द और मौर्य, पाल क्षत्रिय वंशों का राज्य रहा।

हर्षवर्धन, विक्रमादित्य छटा तथा कर्णाट वंशीय ब्राह्मण राजाओं का राज्य मिथिला में 1324 ई0 से रहा। कर्णाटवंशीय राजा हरीसिंह देव जी ने पंजी व्यवस्था प्रारम्भ की। वह 1301 में अलाउद्दीन द्वारा राजा बनाये गये। गयासुद्दीन से हारकर वह नेपाल भाग आये। 1325 में गयासुद्दीन तुगलक ने जीतकर मिथिला का राज्य ब्राह्मण कामेश्वर ठक्कुर को दिया। इस कुल के सबके प्रतापी राजा शिव सिंह हुए, उसी के आश्रय में मैथिल कोकिल विद्यापति ने कीर्तिलता, भू परिक्रमा आदि मैथिली ग्रन्थ लिखे। इस कुल का अन्तिम राजा राम भद्रदेव था। अराजकता के बाद 1556 ई0 में अकबर ने जीतकर मिथिला का राज्य महेश ठक्कुर को दिया। इसी वंश में ठक्कुर के स्थान पर सिंह की पदवी दी गई। इस वंश के अन्तिम शासक कामेश्वर सिंह थे, जो 1952 तक शासक रहे।

18 वीं शताब्दी के अन्त में मिथिला में अंग्रेजों का शासन प्रारम्भ हुआ। 1962 के चीन युद्व में राजा ने 6 मन सोना सरकार को दिया। अलाउद्दीन और गयासुद्दीन के विवरण का मिलान पाण्डुलिपि से करें।

ब्रज में मैथिल ब्राह्मणों का आगमन

(प्रमाणित इतिहास)

ब्रजस्थ की सीमाः– आगरा, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस जिला तथा एटा के कासगंज, जलेसर तथा बुलन्दशहर की अनूपशहर तहसील है।

इतिहासः– मैथिल ब्राह्मणों के ब्रज में आने के तीन प्रमाण हैं। 1.मुगल कालीन इतिहास, 2.मिथिला के इतिहास 3.ब्रजवासियों के इतिहास है।

मिथिला के राजाओं, राजनीतिज्ञों आदि का भारत की राजधानी आने का क्रम मिथिला पर मुसलमानों के अधिकार के बाद अलाउद्दीन खिलजी के समय 1301 ई0 में प्रारम्भ हुआ। बंगाल विजय से लौटते समय उसने राजा हरी सिंह देव के सहयोग के बदले उन्हें मिथिला राज दिया। 1324 ई0 में गयासुद्दीन तुगलक का मिथिला पर अधिकार हुआ, हरीसिंह देव नेपाल भाग गये। मिथिला पर गयासुद्दीन का राज हो गया। उसके अत्याचारों से पीड़ित होकर संवत् 1382 (सन् 1325) में मिथिला से 75 ब्राह्मण परिवार तीर्थयात्रा का बहाना कर ब्रज के लिये निकल भागे थे। जयराम मिश्र द्वारा लिखित मैथिल ब्राह्मण ग्रन्थ के पृष्ठ 25 पर इसकी निश्चित तिथि तथा दिन दिया गया है।

''वैसाख शुक्ला एकादशी और दिना रविवार''
''सवंत् 1382 वि0 आये देश विसार।''

सन् 1522 में बाबर के आक्रमण से मुगल और पठानों में झगड़ा चला। यों तो समय–समय पर विद्वान, राजा, मंत्री आदि लोग दिल्ली की ओर आते रहे किन्तु प्राप्त प्रमाणों के आधार पर मिथिला के ब्राह्मणों का ब्रज में आगमन अकबर के समय से माना जाता है। ब्रजवासियों में रामचन्द्र मिश्र लिखित 'हमारा प्रवास' तथा मिथिला वासियों के द्वारा लिखित मिथिला दर्शन (शशिनाथ चौधरी) हिस्ट्री ऑफ मिथिला (उपेन्द्र ठक्कुर) एवं आइने अकबरी आदि अनेक ग्रन्थों के आधार पर अकबर तथा राजा टोडरमल विहार से लौटते समय अपने साथ 80 मैथिल ब्राह्मणों परिवार को लाये थे, जो बाद में शहजादी मंडी आगरा में बस गये। जिनमें से कुछ नाम

इस प्रकार हैं– सुखपाणि झा, जीवननाथ मिश्र, शिवराम झा, श्रीकान्त मिश्र, उमापति मिश्र ग्रहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा, पृथ्वीधर झा, पं0 पुरूषोत्तम ओझा आदि। इनका आने का उद्देश्य सांस्कृतिक था। मिथिला के ब्राह्मण इतने अधिक विद्वान और कर्मकाण्डी थे कि उनमें से एक रघुनन्दन झा ने 1556ई0 में अकबर से मिथिला का राज दान में प्राप्त किया। जैसा कि आइने अकबरी आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों से स्पष्ट है महेश ठक्कुर जब मिथिला के राजा थे, तो उनके प्रिय शिष्य रघुनन्दन झा को राज्य से (किसी कारण) बाहर निकाल दिया गया, वे घूमते हुये आगरा पहुंचे। वहां उन्होंने पूजा पाठ आरम्भ कर दिया। राज्य कर्मचारियों ने उनसे कहा कि सम्राट अकबर के कोई संतान नहीं है अतः आप पुत्र प्राप्ति का कोई अनुष्ठान करें। उन्होंने अनुष्ठान किया, उसका हविष्य महारानी को दिया, जिसको खाकर रानी गर्भवती हुई, जिससे प्रसन्न होकर अकबर ने उन्हें 58 परगने मिथिला को दान में दिये। रघुनन्दन झा ने मिथिला लौटकर यह 58 परगने अपने गुरू महेश ठाकुर को दक्षिणा में दे दिये। अकबर के 9 रत्नों में 5 मिथिला के ही थे।

जार्ज ग्रिपर्सन के आधार पर मिथिला के भगीरथ मिश्र आमेर के राजा मानसिंह के आश्रय में रहे। राजा ने उनके 1 श्लोक पर 1 लाख रूपये दिये थे। श्री राधाकृष्ण चौधरी लिखित ''मिथिलॉक संक्षिप्त राजनैतिक इतिहास के पृष्ठ 39 से स्पष्ट है कि ओइनवार वंश के समाप्त होने के बाद 1530 ई0 में मिथिला में अराजकता फैली। कई दशकों तक पठान और मुगलों में संघर्ष चलता रहा, जिससे अनेक विद्वान तथा साहित्यकार मिथिला छोड़कर नेपाल, आगरा आदि की ओर चले गये। आइने अकबरी, मुगल इतिहास, रज्जनामा, मुन्तखाव उद्दतवारीख आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों में (अनेक मैथिल विद्वानों के नाम) दिये गये हैं। इन विद्वानों का अकबर के दरबार में बहुत सम्मान था।

जहांगीर के शासनकाल में भी फत्तन मिश्र विद्याधर मिश्र आदि मैथिल विद्वान आगरा आये, जैसा कि जहांगीर नामा, तुजुके जहाँगीरी आदि ग्रन्थों से स्पष्ट है हमारे प्रवास ग्रन्थ के पेज 14 पर लिखा है कि जहांगीर

के समय में महाराजा शुभंकर ठाकुर से मनोमालिन्य हो जाने के कारण श्याम झा तथा अन्य 100 से अधिक व्यक्ति आगरा आये थे।

शाहजहां में यद्यपि धार्मिक कट्टरता थी, किन्तु हिन्दू विद्वानों, ज्योतिषियों,कवियों के सम्मान की परम्परा को उसने जीवित रखा। जिसका कारण उसका बड़ा लड़का दाराशिकोह था, जो स्वभाव से हिन्दू साहित्य और दर्शन का प्रेमी था। उसने बनारस में 150 पंडितों की सभा कराई, जिसमें 25 ब्राह्मण मिथिला के थे, जिन्हें दारा ने कोल(अलीगढ़) में बसाया। क्योंकि वह कोल का फौजदार था, आज भी उसका किला बना है। मुसलमान उससे नाराज थे। जब शाहजहाँ बीमार पड़ा तो औरंगजेब ने दारा को बन्दी बना तथा उस पर विधर्मी होने का आरोप लगाकर प्राणदण्ड दिया। दारा के शासन में भी वंशीधर मिश्र, रघुदेव मिश्र, विश्वेसर आदि 25 विद्यानों को सम्मानित किया गया। जैसा कि वी0जे0 हसरत तथा कालिका रंजन कानूनगो द्वारा लिखित दाराशिकोह नामक ग्रन्थ में दिया है। चूंकि दारा कोल (अलीगढ़) का फौजदार था, इसलिए इनमें से 25 परिवार अलीगढ़ में ही बसे। इस प्रकार 10 गोत्र के मैथिल ब्राह्मण ब्रज में आये।

1658 ई0 में औरंगजेब जब सिंहासन पर बैठा तो उसने भारत को पूर्णतः इस्लामी राज्य बनाने की योजना तैयार कर हिन्दुओं पर संगठित अत्याचार किये। यह बात इतिहास प्रसिद्ध है तथा जे0 सरकार के ग्रन्थ ''शीर्ट हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब'' से स्पष्ट है। इसी कारण दिल्ली, आगरा से ब्राह्मण लोग भागने लगे, उनमें जो समर्थ तथा उच्च श्रेणी के विद्वान थे, वे मध्य प्रदेश तथा दक्षिण के स्वतन्त्र राजाओं के आश्रय में चले गये। किन्तु जो गरीब और मध्यम स्थिति के थे, उन्होंने निकटवर्ती 58 गांवों में शरण ली, जो बाद में खेड़े कहलाये, ये अधिकतर यमुना के पूर्वी तट पर बसे, क्योंकि यमुना के पश्चिमी में दिल्ली, आगरा राजमार्ग था, जहां शाही सेना आती जाती थी, आपत्तिकाल में जब सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा अग्रसैन क्षत्रिय से अग्रवाल वैश्य बन गये और परशुराम के डर से क्षत्रिय खत्री हो गये तो औरंगजेब के डर से ब्रह्मकर्म को त्याग कर मैथिलब्राह्मण भी अन्य ब्राह्मणों की तरह अनेक अन्य कार्यों को करने लगे हों तो अनौचित्य नहीं है।

समायोजनकाल

बुन्देलखण्ड, गढ़वाल, बीकानेर एवं मध्य प्रदेश के कई राजाओं के यहाँ मैथिल ब्राह्मण विद्वान इस काल में भी रहे, जिनमें गोकुलनाथ, पीताम्बर शर्मा, विद्यानिधि सुखदेव मिश्र, गंगा नन्दलोचन झा आदि के नाम प्रमुख हैं। 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में मैथिल विद्वानों ने और आगे तक प्रसार किया। दक्षिण में पेशवाओं के यहाँ तथा पश्चिम में पंजाब लाहौर एवं मुल्तान के राजाओं के आश्रय में ये लोग रहे। जैसा कि शशिनाथ चौधरी के मिथिला दर्शन से ज्ञात होता है। 1857 तक देश में उथल पुथल, घात प्रतिघात, उत्थान पतन होता रहा, जिससे जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया, जिससे मिथिला के प्रवासीजनों के सम्बन्ध मातृभूमि से दृढ़ न रह सके। छिन्न भिन्न हो गये, काल गति से अपने को भूलने लगे। औरंगजेब के डर से आगरा, दिल्ली से भागकर मैथिल ब्राह्मण गांवों में छिप गये। जो गांव छोड़कर शहरों में आ गये, उन्हें रोजगार प्राप्त हो गये। पहले कारीगर फिर उद्योगपति, व्यापारी तथा शिक्षाविद बन गये और अपने को अच्छी तरह समायोजित कर लिया, किन्तु जो गांवों में ही रह गये, वे रोजगार के अभाव में उन्नति नहीं कर सके। खेती, लकड़ी, लोहा, पशुपालन तक ही सीमित रहे और कठिन परिश्रम के साथ लज्जा जनक स्थिति में जो मिला, उसी के साथ समायोजन किया। बिखरे होने के कारण सामाजिकता का अभाव रहा। इस समायोजन में लगभग 100 वर्ष लगे।

पुनरूत्थानकाल

1857 की क्रान्ति के बाद भारतीय जनता में डाक, रेल, छापे खाने, पत्र पत्रिकाओं आदि वैज्ञानिक साधनों द्वारा नये समाज का निर्माण हुआ। सामाजिकता का प्रसार हुआ, इस जागरण काल में मैथिल ब्राह्मण समाज में भी नई चेतना का संचार हुआ। 1857 ई0 की क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने

भारत में डाक, तार, रेल तथा शिक्षा, उद्योग का विकास किया। अन्य समाजों की भांति मैथिल ब्राह्मणों में चेतना जाग्रत हुई। अलीगढ़ के स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, हरगोविन्द मिश्रा, डिप्टी फूलचन्द तथा आगरा के ब्रजमोहन झा, लोचन प्रसाद पाठक, मनोहरलाल आदि मदनमोहन शास्त्री मथुरा, हाथरस के भूदेव प्रसाद मिश्र ने मिथिला से सम्पर्क स्थापित किया। 1922 में ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन की स्थापना आगरा में हुई, अलीगढ में सिद्वान्त सभा की स्थापना 1882 ई0 में हुई। शिक्षा का प्रसार हुआ। कॉलेजों की स्थापनायें हुई। इसी समय बुद्धि के धनी कुशल कारीगर के रूप में इस समाज के लोगों ने झाँसी, अजमेर, दाहौद आदि रेल कारखानों में नौकरी की और वहीं बस गये। मिथिला से सम्बन्ध प्रगाढ़ होने लगे। मिथिला संघ से जुड़े महाराजा कामेश्वर सिंह भी 1954 में आगरा और 1956 में अजमेर आये थे।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (रणधीर) निवासी मौसिमपुर (अतरौली) अपने परिवार को छोडकर अलीगढ़ मियां से 400/– में बगीचा खरीदकर रहने लगे और यहां अन्य सम्बन्धियों पं0 रामलाल, पं0 हरप्रसाद रहमापुर, जयराम कुतुब की सराय छत्रपाल दुबे का पडाव आदि के कहने से उन्होने जाति के उद्वार का काम अपने हाथ में लिया और मिथिला जाकर टूटे हुए सम्बन्धों को पुनः जोडा। उन्हीं के प्रयत्न से अलीगढ के प्रवासीजनों का मिथिला जाना तथा मिथिला वासियों का अलीगढ आना प्रारम्भ हुआ। 1882 ई0 में स्वामी जी ने सिद्वान्त सभा की स्थापना की। लोगों को अपने 150 वर्ष की पंजी तथा बीजी वंश परम्परा से याद थी किन्तु भावी संतान की सुविधा हेतु पंजी को दरभंगा से पंजीकार बुलाकर चढवाने लगे। 19वीं शताब्दी में पंजीकारों और विद्वानों के अतिरिक्त दरभंगा नरेश महाराजाधिराज श्री कामेश्वर सिंह जी का आगमन भी 1954 में आगरा, 1956 में अजमेर हुआ। बाद में तो मिथिला से घनिष्ठता इतनी अधिक बढी कि शादी विवाह इधर से उधर तथा उधर से इधर होने लगे। डोरीलाल श्रोती के नाती का विवाह सुबोधनाथ झा कमिश्नर ने मधुवनी से कराया।

आधुनिक काल

(1947 से वर्तमान तक)

1947 में आजादी मिलने के बाद मैथिल ब्राह्मणों ने गाँव छोड़कर शहरों का रूख किया और अच्छे उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक, साहित्यकार, इंजीनियर, डॉक्टर, पी0एच0डी0 धारी बन गये। आज दिल्ली, फरीदाबाद, लुधियाना, अज मेर, दाहौदु, बम्बई, झांसी, हरिद्वार, उत्तर भारत में ही नहीं दक्षिण भारत, गुजरात, बंगाल, बिहार आदि समस्त भारत एवं कनाडा अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, दुबई आदि विश्व के देशों में बृजस्थ मैथिल ब्राह्मण अपनी संस्कृति को संजोये हुये हैं। किन्तु सामाजिकता का विकास जितना होना चाहिये, उतना नहीं हुआ। कारण एक वही ऐतिहासिक ज्ञान की कमी है। यद्यपि अनेक सामाजिक संगठन एवं पत्रिकायें, विद्यालय कॉलेज आदि ब्रज क्षेत्र, बम्बई तथा अजमेर में चलाये जा रहे हैं।

वर्तमान समय में सामाजिक विस्तार, जीविकोपार्जन आदि अनेक कारणों से मैथिल लोग सारे भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में भी जाकर बसने लगे। अतः यह कहना भी सर्वथा अनुचित होगा कि अमुक क्षेत्र में मैथिल ब्राह्मण नहीं है, आज समस्त भारत में 4 करोड मैथिल निवास करते हैं। भारतीय स्तर पर ऑल इण्डिया मैथिल ब्राह्मण संघ दरभंगा प्रान्तीय स्तर पर ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महा सम्मेलन, आगरा प्रवासी मैथिल ब्राह्मण सभायें सिद्धान्त सभा, ब्रह्मानन्द परिषद अलीगढ मैथिल एकेडमी, बनारस विदेह मैथिल संघ, विप्र मण्डल बम्बई आदि अनेक संस्थायें जाति उत्थान में कार्यरत हैं। मैथिल ब्राह्मण महासभा अलीगढ में 1996 में कैलाश चन्द्र शर्मा, रघुवीर सहाय शर्मा, जयप्रकाश शर्मा ने बनाई। जिसने समाजहित में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका 2005 से इसी संगठन ने चलाई। मैथिल ब्राह्मणों के विषय में सम्पूर्ण विवरण बेबसाइट **www.maithilbrahminmahasabha.in** पर पढ़ सकते हैं। इसके अलावा आप अपने स्मार्टफोन में You Tube पर **MAITHIL BRAHMIN** टाईप कर मैथिल ब्राह्मण से सम्बन्धित विषय की जानकारी देख सकते हैं, जिसमें बताया गया कि वर्तमान में ब्रज में मैथिल ब्राह्मण परिवार, गोत्र, खेडा, बीजी पुरूष, गोत्रों की उपयोगिता, खेडों की उपयोगिता, ऋषि गोत्रों की संख्या इत्यादि देख सकते हैं।

ब्रज के मैथिल ब्राह्मणों की सामाजिकता एवं वैधता

ब्रज प्रदेश में मैथिलों के निवास का प्रमाण ऐतिहासिक आधार पर दिया जा चुका है इसके अतिरिक्त बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक जनसंखीय, परम्परागत एवं शासकीय प्रमाण भी है।

1. ब्रज के मैथिलों ब्राह्मणों में भी ब्राह्मण जातीय गुण मिलते हैं। वेद में ब्राह्मण के 6 गुण बताये हैं। 'जन्मना जायूते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते। वेदाभ्यासात्भवेद्विप्रो, ब्रह्म जानाति ब्राह्मण।'' विद्या पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना–कराना, दान लेना, दान देना इनमें है। ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों में विद्या प्रेमी, दानी, ब्रह्म ज्ञानी, कर्मकाण्डी पंडित, विद्वान, भगवत् भक्त, गुरूता आदि अनेक गुणों से सम्पन्न अनेकानेक व्यक्ति अन्य समाजों की तुलना में आज भी अधिक प्रतिषत में है। जिनके नाम गिनाने से बहुत बड़ा ग्रन्थ बन सकता है। **देखें मिथिला की पाण्डित्य परम्परा।**

2. गोपालपुरी के पं0 शीतलदेव प्रकाण्ड पंडित थे। पूरे अलीगढ़ में किसी कोने में किसी भी जाति के व्यक्ति उन्हें मानते थे। कोई दुकानदार उन्हें न तोलकर देता था और ना ही पैसे लेता था।

3. ब्रज प्रदेश में मैथिलब्राह्मणों के रीति–रिवाज व 16 संस्कार विवाह आदि की विधियाँ एवं मान्यताएं ब्रज प्रदेश के अन्य ब्राह्मणों की भांति है।

4. इतिहास के पाठ में 75 परिवार तुगलक के समय में 80 परिवार अकबर के समय में तथा जहाँगीर के समय में 100 व्यक्ति दाराशिकोह के समय 25 परिवार आने का प्रमाण है। जिसे दरभंगा के पंजीकारों, मिथिला के इतिहासों एवं मुगलकालीन इतिहासों तथा जन श्रुतियों ने स्वीकारा है। जब 25 वर्ष में जनसंख्या दुगनी हो सकती है तो आज 500 तथा 700 वर्षों में करोड़ों मैथिल ब्राह्मण उत्तर प्रदेश में होना आश्चर्य की बात नहीं है। ज्यामितीय गणना से यह आज करोडों में बैठती है।

5. जैत (मथुरा) में पं. रामचन्द्र मिश्र के विरूद्ध चला मुकदमा में दिया गया निर्णय भी एक प्रमाण है।

6. मैथिलों के दैनिक कर्मकाण्ड जनेऊ आदि संस्कार परम्परागत है। जिन्हें सैकड़ों गौड़, सनाड्य, सारस्वत आदि पंडित सैकड़ों वर्षों से कराते चले आ रहे हैं। दरभंगा (मिथिला) के भी कई पंडित मथुरा, अजमेर आदि

स्थानों पर रहकर यहां के मैथिल ब्राह्मणों के संस्कारों को कराते हैं।

7. ऋग्वेद में, पुराण एवं शास्त्रों में लिखा है कि यज्ञ में होता के रूप में भाग लेने वाले का अधिकार केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, रथकार को है।

8. दरभंगा से निकलने वाली विद्यापति डायरी में पं0 रवेन्द्र नारायन चौधरी (बिहार) ने 1972 प्रकाशन में ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों का इतिहास छापा है। जिसका मिथिला के लोगों ने स्वीकारा है।

9. अलीगढ़ कोर्ट से श्री छत्रपाल मिश्र के सम्बन्ध में मैथिल ब्राह्मण का निर्णय 1825 ई0 में हुआ है।

10. मथुरा के तत्कालीन कलक्टर सरग्राउस ने अपनी पुस्तक में ब्रज प्रदेश में मैथिलब्राह्मणों को माना है। पुस्तक मिश्रिया के अंतरामजी के पास थी।

11. सन् 1901 ई0 में अजमेर में पुस्तक ब्राह्मण निर्णय पर चलाया गया मुकदमा तथा उसमें महाराज कामेश्वर सिंह दरभंगा बनारस के गजेटियर की गवाही के प्रमाण के उपरान्त हाईकोर्ट बीकानेर का निर्णय ब्रज में मैथिल ब्राह्मणों का प्रमाण आज भी सुरक्षित है। पुस्तक के लेखक छोटेलाल (सनाड्य ब्राह्मण अतरौली) स्टेशन मास्टर फुलैरा राजस्थान पर 200/– जुर्माना या 6 माह की सजा का आदेश हाईकोर्ट ने दिया। मैथिल ब्राह्मण स्टेशन मास्टर फुलैरा खेमचन्द द्वारा केस चलाया गया, पुस्तक की प्रतियां जब्त की गई। निर्णय की प्रति संलग्न है।

12. 1911 की जनगणना में अलीगढ़ में ब्रज में 3500 मैथिल ब्राह्मण दिये हैं। जब 25 वर्ष में ज्यामितीय आधार पर संख्या दूनी होती है तो 110 वर्ष में 56000 होती है, जो आज है। यह सरकारी प्रमाण है।

सामाजिक उत्थान में कमी के कारण

सौ वर्ष के पुर्नःजागरण काल में ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों ने उतनी उन्नति नहीं की, जितनी अन्य जातियों ने की है। इसके निम्न कारण मेरी राय में हो सकते हैं।

1. वर्तमान युग प्रचार का युग है। हमारे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपने पूर्व इतिहास का प्रचार जनता के सम्मुख आज तक नहीं किया। अधिक से अधिक कुछ गिने चुने लोगों तक ही सीमित रहा। जातीय सभायें, उत्सव अपने तक ही सीमित रखे गये। जिससे आम जनता को हमारे विषय में कभी भी पूर्ण जानकारी प्राप्त न हो सकी।

2. कमी केवल कार्यकर्ताओं की ही नहीं है। समाज के जो भी थोड़े बहुत उत्सव, सभायें कभी होती भी हैं तो आपसी वैमनस्य, समयाभाव आदि कारणों से सभी लोग उसमें भाग नहीं लेते हैं।

3. निम्न वर्गीय मैथिल समाज का सम्बन्ध श्रमिक पेशों से जुड़ा होने के कारण उनका जीवन स्तर ऊंचा नहीं हो सका। अधिकतर लोग अनपढ़ तथा श्रमजीवी रहे। जो सामाजिक उत्थान में अन्य जातियों से स्पर्धा न कर सके। ''सर्वेगुणा काँचन माश्रयन्ते'' के वर्तमान युग में आर्थिक दृष्टि से विपन्न यह समाज अन्य ब्राह्मणों से पिछड़ गया।

4. कुछ पढ़े लिखे प्रतिभा सम्पन्न लोग जो समाज को दिशा दे सकते हैं, अपने को समाज से अलग समझने लगे तथा अपने आपको छुपाने लगे। क्योंकि समाज ने उन पर मिथ्या आरोप लगाये।

5. ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण ब्रज प्रदेश में प्रवासी ब्राह्मण थे, जो यहां के स्थाई निवासी ब्राह्मणों से प्रतिस्पर्धा न कर सके। यहीं नहीं यहां के अन्य ब्राह्मणों ने जनता को भी अपने प्रभाव से मैथिल ब्राह्मणों के विरूद्व कर दिया।

6. समाज का कोई सर्वमान्य नेता का न होना, अपनी–अपनी ढपली, अपना अपना राग वाली समाज की प्रवृति है।

7. एक विशेष कारण आपसी मतभेद का है। कुछ गिने चुने लोग जो अपने को समाज का ठेकेदार मानते हैं। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये शुद्ध अशुद्ध, पूरब, पश्चिम, सही गलत, प्रवासी ब्रजस्थ, आगरा अलीगढ़ आदि तरह तरह के झगड़े खड़े किये हुये है। वास्तविकता यह है कि आज कोई भी जाति अपने को शुद्ध नहीं कह सकती। सम्मिश्रण सम्भाव्य है। मैथिली रामायण के अनुसार मैथिल ब्राह्मण को भगवान राम का श्राप लगा है, जब वह राजसूय यज्ञ निमन्त्रण देने मिथिला गये तो आश्रमों के ऋषियों तथा जनक दरबार में ब्राह्मणों ने सीता को लेकर उनसे खूब उल्टा सीधा कहा। तब राम ने श्राप दिया कि जैसे तुम मुझसे लड़ रहे हो, वैसे ही सदैव आपस में लड़ते रहोगे। भगवान से प्रार्थना है अब इस श्राप को वापस ले लें।

8. पुराने कार्यकर्ता नये जवान लोगों को आगे बढ़ने नहीं देते।

दृढ़ संगठन के लिए कुछ सुझाव

आज ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों के संगठन का कार्य दुःसाध्य नहीं तो कठिन अवश्य है। संगठन के सम्बन्ध में मेरे निम्न सुझाव हैं।

1. आज का युग निठल्ले लोगों का नहीं है। पेशे सभी अच्छे हैं। आज हर जाति हर पेशे को अपनाये हुये हैं। अतः किसी भी पेशे को हीन न समझते हुये परिश्रमपूर्वक धन वैभव को इकठ्ठा किया जाये। किसी भी पेशे में मालिक बने, मजदूर नहीं।

2. ''स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते'' अपने बच्चों को विद्वान बनाये। वह धन और यश दोनों पैदा कर सकता है।

3. सम्पूर्ण समाज का एंक उच्च स्तरीय प्रजातांत्रिक संगठन समन्वय समिति हो, जिसकी इकाइयां ब्लाक या तहसील स्तर पर हों। हाईकमान का सभी इकाइयों पर कड़ा नियंत्रण हो। महासम्मेलन आगरा इस कार्य को कर सकता है, अन्य संस्थायें उसी का भाग बनकर कार्य करें। सभी संगठनों में समन्वय होना चाहिये।

4. समय समय पर रचनात्मक कार्यक्रम चलाये जाये।

5. शुद्धता बनाये रखने के लिये संगठन की इकाइयों को यह अधिकार दिया जाये कि वह अपने सदस्यों को जाति के सम्पूर्ण तथ्यों सहित एक प्रमाण पत्र दे, जिससे सदस्य संख्या भी बढ़ेगी तथा सामाजिक उत्सवों में उपस्थित भी अनिवार्य हो जायेगी। बच्चे भी परिचित होंगे। प्रमाण पत्र स्वागत कक्ष में फ्रेम में टंगा हो।

6. जातीय स्तर पर प्रत्येक जिले में एक आर्बीट्रेशन बोर्ड हो जो जातीय विवादों को हल करे।

7. अन्य 10 कुल ब्राह्मणों के साथ अपनी रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित किया जाये, जिससे आपस में भेदभाव समाप्त हो सके।

8. समाज का कोई आदमी ऐसे कार्यों को न करे, जिससे जाति का

अपमान होता है।

9. पंजीकारों को चाहिये कि स्थानीय संगठन की सहमति पर ही किसी व्यक्ति की पंजी बनाकर दें।

10. संगठन अपने कार्यक्रम में सभी ब्राह्मण संगठनों को बुलायें तथा जायें और कार्यक्रम खुले स्थान पर रखें, जहाँ हर कोई देख सुन सके।

11. सामाजिक पत्र–पत्रिकाओं का अत्यधिक प्रकाशन करें। क्योंकि ये समाज के बौद्धिक स्तर की माप हैं।

12. प्रत्येक शहर, गांव, जिला, प्रान्त में एक नेता के नेतृत्व में अथवा एक संगठनों की बात सभी मानें।

13. शिल्पाविंदी जैसी छोटी वस्तु का जब प्रचार–प्रसार हो सकता है तो इतने बड़े समाज के इतिहास का क्यों नहीं होना चाहिये, अवश्य करें।

14. हर समाज की उन्नति का रास्ता राजनीति से होकर जाता है, अतः जहां भी हैं, गांव, ब्लॉक, जिला प्रदेश, देश की राजनीति में अपनी सक्रियता बढायें।

15. कोई भी मैथिल ब्राह्मण दूसरों पर बिना प्रमाण आरक्षण का मिथ्या आरोप न लगायें। बी0सी0 को आरक्षण विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 1993 में मण्डल कमीशन लागू करके 27 प्रतिशत का अध्यादेश लागू कर दिया था, उससे पहले बी0सी0 का आरक्षण नहीं था।

16. मैथिल ब्राह्मण सन्देश सजातीय बन्धुओं पत्र–पत्रिकायें समाज के बौद्धिक स्तर की माप होती है। समाजोत्थान के उद्देश्य से 2005 से मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका का प्रकाशन लागत से कम से कम किया जा रहा है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि इसका मूल्य तब से अब तक 10 रूपये ही है। अतः आपसे अनुरोध है कि इसके अधिक से अधिक सदस्य बनाकर इस कार्य में सहयोग करें।

एक इतिहास ऐसा भी (भूली बिसरीं यादें)

मैथिल ब्राह्मणों के ब्रज में पुनरूत्थान काल में अनेक मनीषियों ने जो बलिदान दिये, उन्हें आज की पीढ़ी को याद दिलाना आवश्यक है।

1. **स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती–** जिला अलीगढ़ तहसील अतरौली के ग्राम मौहसिमपुर में स्वामी जी का जन्म 1910 वि0 को हुआ। भतीजे की शादी इज्जतपुर लेखक के परिवार से हुई। देहरीदान के 150 रू. तथा लेखक के परिवार के 100 रू0 तथा कुछ चंदा करके अलीगढ़ में नूरजहां बेगम से 400 रू0 में बगीची खरीदी, जो आज एस0एम0बी0 इण्टर कॉलेज है। देहरीदान के रूपये जमींदार सनाडय परिवार में न बांटने पर परिवार के छिछालाल शर्मा को इज्जतपुर छोड़कर भवीगढ़ में बसना पडा। सन् 1882 में स्वामी जी ने सिद्वान्त सभा बनाई। समाज के लिये अल्प समय में स्वामी जी ने बहुत काम किया। मिथिला कई बार गये, टूटे सम्बन्धों को जोडा। पंजीकार बुलाकर उत्तीणें चढवाई। आज का ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण समाज उनका आभारी है।

2. **पं0 हरप्रसाद मिश्र–** पुस्तक के लेखक के पिताश्री पं0 रामचन्द्र ठक्कुर के शिष्य, भूदेव ठक्कुर और चुन्नीलाल झा के सहपाठी पंडित जी का जन्म अतरौली तहसील के दादों (सांकुरा) के पास गांव खान आलमपुर (माजरा दुलीचन्दपुर) 60 बीघा जमीन के जोता श्री दुलीप मिश्र के घर 1885 में हुआ। पाण्डित्यकर्म क्षेत्र में प्रारम्भ करने पर गांव के सनाडय ब्राह्मणों ने काम वाले बंद करा दिये। कुंये से पानी भरना बंद कर दिया। जमींदार अबूबकर खानदादों के हस्तक्षेप से परिस्थिति सामान्य हुई, किन्तु कारिंदा से झगडा हो जाने पर 60 बीघा जमीन छोडकर रहमापुर इज्जतपुर के पास आकर बसे।

पाण्डित्यकर्म करने पर ग्रामीण क्षेत्र में बहुत परेशानी उठानी पडी। जिजमान के लडके की शादी एटा जिले से हुई। वहां के ब्राह्मणों

ने ऐलान कर दिया कि यदि इनकी विरादरी का पंडित आवे तो मारपीट कर भगा दो। लडकी वाला भागकर पंडित जी के पास आया। उसे गोत्र, शाखा, सूत्र मूलग्राम आदि लिखकर दिये, याद करने की कहकर लौटा दिया। बारात में गये और जनवासे के बजाय जमींदार (लोधे राजपूत) की चौपाल पर गये। तिलकछापे, वेष वूसा देखकर जमींदार ने स्वागत किया और पता चलने पर पूछा कि पंडित जी हमारे गांव का सोना अपने को ब्राह्मण बताता है। पिता ने उसे बुलवाया और गांव के सनाडय पंडितों को भी बुलवाया। सोनपाल से गोत्र, शाखा, मूलग्राम, बीजीपुरूष, देवता, वेद आदि पूछे जो उसने सही बताये, गांव का पंडित कुछ भी न बता सका। तब पिताश्री ने कहा ठाकुर साहब इसने सभी बात ब्राह्मणों की ही बताई है, अतः यह पंडित ही है। गांव के पंडित को जमींदार ने फटकारा और पिताश्री को 1 रू0 दक्षिणा देकर पैर छू आशीर्वाद लिया। इस प्रकार बलिदानों से भरी थी उस समय मैथिल ब्राह्मणों पंडितों की जिन्दगी।

इस प्रकार की कठिनाईयां एक नहीं हजारों मिलती हैं। एक जगह की नहीं आगरा, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, अजमेर, झांसी अनेक स्थानों पर बृजस्थ मैथिल ब्राह्मणों को झेलनी पड़ी हैं। अनेक कोर्ट केस 120 वर्षों में चले सफलता मिली। कहने को आज भी बहुत कुछ है। 4 वैभवशाली पुत्र, 9 सुयोग्य नाती, 20 पंती (चीफ इन्जीनियर, प्रोफेसर, स्टेशन अधीक्षक, व्यापारी, नेता, मेजर, आयुर्वेदाचार्य, डॉक्टर) समाज को देकर 1982 में 100 वर्ष की आयु प्राप्त कर ब्रहमलीन हुये।

विशेषः 20वीं सदी के अनेक विद्वानों जिन्होंने समाज का काम किया, का वर्णन मिथिला की पाण्डित्य परम्परा में पढ़ा जा सकता है। डिप्टी फूलचन्द हरगोविन्द मिश्र, फूल बिहारी शर्मा आदि अलीगढ़ लोचन प्रसाद पाठक, ब्रजमोहन झा, मनोहरलाल, पीतम दत्त शास्त्री आदि आगरा, मदनमोहन शास्त्री, जगन्नाथ प्रसाद आदि मथुरा, भूदेव प्रसाद हाथरस हैं।

गोत्रादि पंजी व्यवस्था

प्रत्येक ब्राह्मण को अपने वंश तथा पंजी के विषय में ऋषि गोत्र, प्रवर, मूलग्राम, बीजीपुरूष, आस्पद, शाखा, सूत्र, पाद, शिखा, देवी, देवता का ज्ञान आवश्यक है। ब्रज के मैथिल ब्राह्मणों में ब्रज का खेड़ा गोत्र जानना आवश्यक है।

1. **ऋषि गोत्र–** समस्त ब्राह्मण 24 ऋषियों की सन्तान है, इनमें से 15 ऋषियों की सन्तान मैथिल ब्राह्मण हैं। श्री डोरीलाल श्रोती ने ब्राह्मण वंशों के इतिहास में यह संख्या 19 बताई है, इनमें से केवल 10 गोत्र के ही मिथिला से ब्रज में आये थे।

2. **प्रवर–** यह ऋषियों का एक समूह है, जिनके द्वारा वंश को बढ़ाया गया, किसी गोत्र में तीन तथा किसी में पांच प्रवर हैं, जैसे– वशिष्ठ गोत्र में वशिष्ठ, अत्रि और सांस्कृत तथा सावर्ण में सावर्ण, भार्गव, यमदग्नि, आप्लवान, औवर्च्यवन / मिथिला में शादी प्रवर बचाकर होती है।

3. **मिथिला का मूल ग्राम–** राजा हरी सिंह देव के समय 1301 में पंजी व्यवस्था प्रारम्भ की गई, उससे पहले नहीं थी। पंजी के समय जिस गांव में जिस ऋषि गोत्र के ब्राह्मण मिले, उनका वही मूलग्राम माना गया। इस प्रकार मूल हैं, इनमें 59 मूलग्राम के ही ब्राह्मण ब्रज में आये थे।

4. **बीजी पुरूष–** पंजी के समय, जो पुरखा जिस गांव में पाया गया, वही उस गोत्र का बीजीपुरूष कहलाया। कुछ लोगों का मत है कि जो व्यक्ति मिथिला से ब्रज में आये, उसे बीजी पुरूष कहते हैं, यह शोध का विषय है।

5. **खेड़ा ग्राम–** औरंगजेब के शासनकाल में आगरा से भागकर,

जो लोग जिस ब्रज क्षेत्र के गांव में बसे, छिपकर रहे, वह गांव ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों का खेड़ा ग्राम (गोत्र) कहा जाता है। इनको बचाकर शादी की जाती है। समान अंश न होने का लाभ प्राप्त करने हेतु ननसार का भी खेड़ा बचाया जाता है। छोटा समाज होने के कारण ददसाल को छोड़ दिया गया है। बच्चे में मां बाप दोनों के ही जीन्स आते हैं।

6. **आस्पद–** व्यक्ति के उपनाम (सरनेम) को आस्पद कहते हैं। मैथिल ब्राह्मणों ने झा, मिश्रा, ठक्कुर, श्रोती, पाठक, बक्शी, राय, ओझा आदि आस्पद होती है। इसका वंश की पहचान में विशेष महत्व है।

7. **वेद–** वेदपाठी ही ब्राह्मण माना जाता है, पहले चारों वेदों का ज्ञान आवश्यक था, किन्तु कालान्तर में स्मृति ह्राश (कम) होने पर किसी 1 वेद का ज्ञान ही पर्याप्त माना गया, मैथिल ब्राह्मणों में वशिष्ठ, गौतम, कात्यायन, मौदगल्य, सावर्ण के वंशज यजुर्वेदी हैं। कौशिक–भारद्वाज–पाराशर–काश्यप–वत्स सामवेदी, कौण्डिल्य–विष्णुवृद्वि–शाण्डिल्य अथर्ववेदी और गार्ग्य–कृष्णात्रेय ऋग्वेदी हैं।

8. **शाखा–** बाद में एक वेद का ज्ञान भी कम करके उसकी एक ही शाखा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया। इनमें यजुर्वेदीय को माध्यान्दिनी शाखा तथा जो सामवेदी है, उन्हें कौथुमी शाखा है, शाण्डिल्य को जाजल कौण्डिल्य की पिप्लाद विष्णुवृद्वि को सोनकीय गार्ग्य की शाकल तथा कृष्णात्रेय को ऐतरेय शाखा मानी जाती है।

9. **सूत्र–** ऋषियों ने मनुष्य जीवन में 16 संस्कार बताये हैं। उनको मानने और मनाने के नियम (सूत्रों) की रचना की है। याज्ञवल्क्य ऋषि ने याज्ञवल्क्य संहिता लिखी। इसी तरह यजुर्वेद की माध्यान्दिनी शाखा को

मानने वाली कात्यायन सूत्र को मानते थे। सामवेदी गोभिल सूत्र को मानते हैं। अथर्ववेदी आश्वलायन तथा ऋग्वेदी का पारस्कर सूत्र है।

10. **पाद–** विवाह, गृह प्रवेश, चौकी पर बैठते समय आदि शुभ अवसरों पर पहले किस पैर का आगे बढाया जाये या रखा जाये, यह उस गोत्र का पाद कहलाता है। सभी यजुर्वेदी दाहिना तथा सामवेदी बांये पैर का पहले प्रयोग करें। शेष दाहिने पैर का प्रयोग करें।

11. **शिखा–** हिन्दू धर्म में शिखा का विशेष महत्व है, मजाक में इसे शरीर का ऐन्टीना भी का जाता है। इसके अनेक लाभ हैं किन्तु आधुनिकीकरण में इसका लोप होता जा रहा है। यह हिन्दुओं की पहचान है। शिखा में दाईं या बांई ओर घुमाकर गांठ लगाना दक्षिण या वाम कहलाता है। पाद की तरह यजुर्वेदी दाहिनी तथा सामवेदी बांई शिखा वाले हैं। शेष दक्षिण वाले ही हैं।

12. **देवी देवता–** प्रत्येक ऋषि गोत्र के अलग अलग देवी देवता हैं। इनका प्रयोग बच्चों के मुन्डन, नामकरण आदि शुभ कार्यों के अवसर पर किया जाता है। मुन्डन का समय, स्थान और विधि अपनी कुल परम्परा के अनुसार किया जाता है। अपने कुल देवता का चित्र या मूर्ति घर में रखें। वशिष्ठ की महागौरी, कात्यायन क्षेमप्रदा, मौद्गल्य वहुधा, सावर्ण अम्बा, कौशिक गौरी, काश्यप–भारद्वाज–उमा–पाराशर सिद्धेश्वरी, वत्स त्रिपुरा, शाण्डिल्य महालक्ष्मी, कौण्डिल्य क्षेमकारी, विष्णुवृद्धि ताप्तेश्वरी, गार्ग्य अन्नपूर्णा, कृष्णात्रेय शुभ्रा हैं।

विद्यापति डायरी– 1972

ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा से उद्धत

मिथिला विषयक

प्रवासी ब्रजस्थ मैथिलक संक्षिप्त इतिहास

युग युगसँ मिथिला निवासी अपन विद्वताक कारणें भारत वर्ष में पूज्य रहलाह अछि। भारतीय संस्कृतिक प्राचीनतम केन्द्र दिल्ली, आगरा, मथुरा, काशी, प्रयाग इत्यादि स्थानमें सहस्त्रो वर्षसँ एहि ठमक विद्धानक प्रतिष्ठा एवं सम्मान बनल रहल। तेरहम शताब्दी में अल्लाउद्दीनक शासनकालसँ शाहजहाँक शासनकाल तक ब्रजक विभिन्न स्थान अलीगढ़, हाथरस, रायपुर, मथुरा, आगरा, जयपुर आदि स्थान में मैथिल विद्वान यश–प्रतिष्ठा प्राप्त कय ओहीठाम बसि प्रवास जीवन प्रारम्भ कयल। संवत 1388 वि0 क लगभग मिथिला पर गयासुद्दीन तुगलक आक्रमणसँ भयभित भय मिथिलाक लगभग उप विद्धान तीर्थ यात्राक बहाने ब्रज जाय ओहीठाम बसि गेलह, जिनक सन्तान आई ब्रजक विभिन्न स्थानमे ब्रजस्थ मैथिलक रूप में विद्यमान रहि अपनाकें मैथिल बुझबामे गर्व अनुभव कय रहलाह अछि।

अकबरक शासनकालमे मिथिलासँ को विद्वान दिल्लीक दरबारमे आश्रय पयलन्हि। एकर प्रमुख कारण प्रथम तँई जे अकबर हिन्दू धर्मक गुणग्राही छलाह। दीसर ओहि समय मे ओइनवार वंशक शासनकाल समाप्त भेला पर मिथिलाक स्थिति अराजकताक कारणें विषम छल। दिल्ली दरवारक प्रमुख मैथिल छलाह सुखपाणि झा, डुमरी गाँव निवासी पं0 जीवनाथ मिश्र, बेनीपट्टी बेहटा निवासी शिवराम झा, फुलवारिया ग्राम निवासी श्रीकान्त मिश्र, गृहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा, पंडित पुरूषोत्तम झा, पं0 मधुसूदन मिश्र, नारायण, आदित्य, रामभद्र यदुरूप, बलभद्र मिश्र, वासुदेव मिश्र, गौरीनाथ, गोपीनाथ, भीमनाथ, कवि भागीरथ आदि। अकबरक शासनकालमे उपरोक्त मैथिल विद्वानक सहयोग द्वारा संस्कृत अनेको ग्रन्थक अनुवाद फारसी एवं अरवीमे भेल। अबुल फजलक आइने अकबरीक अनुसारें अकबरक दरबार में विभिन्न धर्म एवं शास्त्रक ज्ञाता विद्वानक संख्या 140 छल जाहिमे विशेष मैथिले विद्वानक संख्या छल। अकबरेक शासनकाल में अपने शिष्य पं0 रघुन्दन झा क द्वारा 1556 ई. में म.म. महेश्वर ठाकुर दिल्ली दरवारसँ मिथिलाक राज्य प्राप्त कयल।

जहाँगीर यद्यपि अपने पिताक सदृश योग्य एवं कर्मठ नहि तथापि हुनको शासनकाल में मैथिल विद्वानक आगमन दिल्ली दरवार रहल जाहिमे प्रमुख छथि–पं0 फत्तन मिश्र, विद्याधर मिश्र, श्याम झा आदिक नाम प्रमुख अछि। एहि समयमे मिथिलाक राजा पुरूषोत्तम ठाकुरक विधवा रानी अपने पतिक हत्यारा बिहारक सूबेदारक बदखिलाफ शिकायत पेश करके हेतु दिल्ली दरवारमे उचित सम्मानक संग पेश भेल छल ह।

शाहजहाँ शासनकालमे दाराक संरक्षण मैथिल विद्वानक सहयोगसँ श्रीमद्भागवत गीता, उपनिषद्, योगवाशिष्ट आदिक अनुवाद फारसी एवं अरबी में भेल–ओहि मैथिल विद्वानमे प्रमुख छलाह–पं0 वंशीधर मिश्र, रघुदेव मिश्र तथा पं0 विश्वेश्वर मिश्र।

धर्मान्ध औरंगजेब तीन पीढ़ीसँ चल अवेत दरबारमे मैथिल विद्वानक सम्मानक स्वस्थ परम्पराकँ इस्लामी जोशमे तोड़ि देल, तत्पश्चात् मैथिल विद्वान लोकनि देशक विभिन्न हिन्दू राजाक आश्रय लेल जाहिमे प्रमुख छथि– गढ़बालक नरेश महाराज फतेसिंह, बुन्देलखण्डक महाराज–छत्रसाल एवं बिकानेरक नरेश–कर्ण सिंह। एहि राज दरवारमे आश्रय लेनिहार मैथिल विद्वानमे मुख्य छथि– पं0 सुखदेव मिश्र, उमापति उपाध्याय (मंगरौनी), गोकुलनाथ उपाध्याय, गंगानन्द एवं पं0 लोचन झा।

अठारहम शताब्दीमे पूनाक राजदरबारमे मैथिल विद्वान पं0 सचल मिश्र सम्मान पौने छलाह, जिनक वंशक एखनहुँ जबलपुर में किछु सम्पतिक अधिकारी छथि।

मुल्तानक शासक के शवदेवक दरवार में मैथिल विद्वान पं0 वैद्यनाथ ''केशव–चरित्र'' क रचना कय सम्मानित भेल छला। पंजाब केशरी रणजीत सिंहक दरबारमे चकौती ग्राम निवासी श्रीनाथ झा दानाध्यक्षक पद पर नियुक्त भय मैथिलकँ गौरवान्वित कयल।

उन्नीसवीं शताब्दीक पूर्वाद्ध में हाथरस राजा दयारामक दरवारमे मैथिल विद्वान माणिक ठाकुर विशिष्ट स्थानपर रहि अनेको ग्रन्थक रचना कयल। हुनक वंशज एखनहु प्रवासी मैथिलक रूप विद्यमान छथि।

उन्नीसवीं शताब्दीक उत्तरार्द्ध ब्रह्मानन्द सरस्वती सरस्वती (प्र0 मैथिल) मिथिलासँ सम्पर्क कय 1882 ई0 में अलीगढ़ श्री मैथिल सिद्धान्त सभाक स्थापना कय मिथिलासँ पंजिकारक बजाय प्रवासी मैथिलक पंजी व्यवस्था कयल; ओहि कममें पंजिकार वबुए मिश्र (जरैल) जगदीश झा

(दरभंगा) ब्रज गेल छलाह। पुनः 1888 ई0 ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा मैथिल ब्राह्मण पाठशाला' क स्थापन अलीगढ़ में भेल जाहिमें संस्कृत, ज्योतिष, कर्मकांडक पठन पाठनक व्यवस्था कय मिथिलाक अनेकों विद्वान के प्राध्यापक रूप में नियुक्त कयल गेल जाहिमे मुख्य छलाह–कहरा निवासी गेन्दालाल झा, पं0 लक्ष्मीनाथ मिश्र, पं0 खेदन मिश्र, जयगोपाल मिश्र एवं पं0 ईश्वरदत मिश्र।

बीसवीं शताब्दी में सरह गोविन्द मिश्र (प्रवासी मैथिल) क प्रयाससँ समय–समय पर मिथिलाक अनेको व्यक्तिक आगमन ब्रज में भेल जाहिमे मुख्य छथि– महाराज कामेश्वर सिंह, पण्डित बलदेव मिश्र, रायबहादुर शिवशंकर झा, पं0 शशिनाथ झा, कविवर सीताराम झा आदि।

उपरोक्त ब्रजस्थ मैथिलक संक्षिप्त इतिहाससँ स्पष्ट अछि जे ब्रजस्थ मैथिल मिथिलाक आदि–वासी थिकाह। देश–कालक ही काणें हुनका लोकनिक रहन–सहन, भेष–भाषा आ भाषामे भले ही किछु अन्तर भेल हो किन्तु मूल गोत्र आ अपन मातृभूमिक गौरवक भावनाकँ ओ ओकनि युग युगसँ सुरक्षित रखैत अयलाह अछि। आई आवश्यकता एहि बातक अछि जे ब्रजस्थ मैथिल एवं मिथिलाक मैथिलक बीच सांस्कृतिक एवं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयास कय हम दोसरक निकटतम बन्धुत्व स्थापित करी। ●●●

ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों के विरूद्व एक षडयन्त्र

परमप्रिय बन्धुओं आज मैथिल ब्राह्मणों में प्रवास के नाम पर भारी मिलावट की जा रही है। बुन्देलखण्डी विश्वकर्मा, राजस्थानी जांगड़, हरियाणा के पांचाल तथा पंजाब के रामगढ़िया, उ0प्र0 के लुहार बढ़ई धीमान आदि अनेक जातियाँ प्रवासी बनकर मैथिल ब्राह्मणों में मिलती आ रही हैं। जबकि मुगल इतिहासों, मिथिला के इतिहासों गजेटियर, ब्रज के इतिहासों में ब्रज के ही मैथिल ब्राह्मणों का ही प्रमाण है। इसीलिये हमारे पूर्वजों ने ब्रजस्थ के नाम से ही अपनी पहचान बनाई थी। घुसपैठियों से अलग करने का एक ही उपाय हमारे खेडा गोत्र हैं। इनमें भी घालमेल का प्रयास है। अतः हमें सजग रहना है। आज खेड़ों के साथ–साथ रिश्तेदारियों और सम्बन्धों को भी महत्व देने की आवश्यकता है।

प्रमाणिक खेड़े की लिस्ट लेखक के पास से जातीय प्रमाण देकर ही प्राप्त की जा सकती है। मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका कार्यालय से भी प्राप्त कर सकते हैं।

ब्राह्मण एकता तथ्य और आवश्यकता

बलिदान को याद करो और एक रहो

उदारमना बन्धुओं ब्राह्मण जाति नहीं, यह जीवन जीने की एक पद्वति है। जन्मना जायते शूद्रः संस्कार द्विजउज्यते'' अतः जन्म से सभी प्राणी शूद्र ही होते हैं, संस्कारों (कर्मों) से जातियां बनती हैं। वैवस्वत मनु के आधार पर ब्राह्मण के 6 कार्य बताये हैं। विद्या पढ़ना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, दान लेना और दान देना। यथासम्भव प्रत्येक ब्राह्मण को जीवन पर्यन्त करना चाहिये।

तथ्य– 1.ऐतिहासिक, 2.भौगोलिक, 3.कर्म आधारित 4.जन्म आधारित 5.संवैधानिक 6.प्रशासनिक

ब्राह्मण एकता के तथ्य– ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के श्लोक 8 के आधार पर सृष्टि आरम्भ में ब्राह्मण जाति एका प्रकीर्तिका के आधार पर सब एक हैं।

1. कर्म के आधार पर सभी में समानता है।

2. उपजातियां केवल 900 वर्ष पुरानी स्थान भेद (भौगोलिक) पर आधारित है, यह स्थान भेद आज के समय में परिवहन साधन, टेलीफोन, मोबाईल, विकास अन्य अनेक कारणों से समाप्त है, फिर भेदभाव कैसा।

3. जन्म के आधार पर जीन्स की समानता है, विज्ञान ने सिद्व किया है कि सभी ब्राह्मणों के जीन्स में बहुत कुछ समानता है, भेद है ही नहीं।

4. शासन के दृष्टिकोण से भी समानता है। संविधान में ब्राह्मण के भेदों को मान्यता नहीं है। शासन से जाति प्रमाण प्राप्त करने पर केवल ब्राह्मण का प्रमाण पत्र मिलता है, उपजाति का नहीं मिलता। शासनादेश है।

5. एक दुश्चक्र के तहत ब्राहमण बाहुल्य क्षेत्रों को बी0सी0 के लिये रिजर्व कर दिया गया है जैसे हरिद्वार हाथरस आदि इस मिथक को तोडना होगा, एक होकर।

आवश्यकता– 1. लोकतन्त्र में बहुमत को मान्यता है, यदि आप उपजातियां में बट जायेंगे तो अल्पमत में आ जायेंगे।

2. राजनीति से ही समाजों के उत्थान का रास्ता निकलता है यदि आप चाहते हैं कि यह समाज अपने पूर्व वैभव को प्राप्त करें तो एकता परम आवश्यक है।

3. संघे शक्ति कलियुगे के आधार पर एकता आवश्यक है। तभी कुछ बन सकते हैं, कुछ कर सकते हो।

4. 1949 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ था, भारत में ब्राह्मण 24 प्रतिशत थे। आज घटते–घटते परिवार नियोजन ने 18 प्रतिशत पर ला दिया है। उत्तर प्रदेश में तो 16 प्रतिशत ही हैं यदि अब भी एक न हुये, सोच न बदली तो एक समय आयेगा, जब ब्राह्मण शब्द केवल पुस्तकों में ही दिखाई देगा।

5. अन्य हिन्दू समाजों के इस कथन **"ब्राह्मणों ने देश का नाश कर दिया,"** को कब तक सहन करते रहोगे। अब तो जागो और एक रहो।

6. ब्राह्मण समाज भारत का प्रभावी एवं प्रमुख समाज रहा है, इसको आदिकाल से जाना जाता है। राजा भले ही कोई रहा हो, प्रधानमंत्री ब्राह्मण ही होता था। चाणक्य का उदाहरण सामने है, जिसने एक साधारण बालक को चक्रवर्ती सम्राट बना दिया। आज आपसे यही अपेक्षायें हैं।

7. औरंगजेब ने जब भारत को इस्लामी राज्य बनाया तो सबसे ज्यादा ब्राह्मणों पर ही अत्याचार किये। वह जानता था यदि ब्राह्मण मुसलमान बन गये तो शेष जातियां अपने आप बन जायेंगी और अफगानिस्तान, ईरान, इण्डोनेशिया की तरह भारत भी पूर्ण इस्लामी राज्य हो जायेगा। आज हिन्दुओं को मुख्यतः एस0सी0 को ब्राह्मणों का आभारी होना चाहिये, जिन्होने मरना स्वीकार किया धर्म नहीं छोडा। सोलह मन थे तुले जनेऊ संख्या ना जानी। न डाला एक बूंद पानी आंख से एक बूंद पानी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद कत्लेआम कर लाये गये जनेऊ 16 मन तोले गये थे।

मैथिल ब्राह्मण नौजवानों अपने स्मॉर्ट फोन से You-Tube को Open कर उसमें MAITHIL BRAHMIN लिखें, और सर्च करने पर भगवान परशुराम जी के चित्र वाले आइकन पर जाकर चैनल को Subscribe करें और सभी वीडियों को ध्यान से देखें और सुनें।

लेखक परिचय

नाम – **रघुवीर सहाय शर्मा**
पिता – स्व0 श्री हरप्रसाद मिश्र
जन्म – ग्राम रहमापुर (अतरौली),अलीगढ़।
5 जुलाई 1934
मोबाईल – 9411212100, 8218721824
निवास – ए/103 ग्रीन पार्क, अलीगढ़।
डी–92/4 ट्रान्सयमुना द्वितीय गोयल के पीछे , आगरा।
शिक्षा – एम.ए., बी.एड., सा0रत्न
कार्यक्षेत्र – जिला कृषि शिक्षा पर्यवेक्षक शिक्षा विभाग उ0प्र0
सेवानिवृत– 30 जून 1993 ई0

प्रकाशित रचनायें–

मंथन, वैष्णवी, अमरधाम, विरहशतक, काव्य नाटिकायें, सांध्यदीप, अर्पण, असुर भयाउनि, रामजन्म भूमि चालीसा, प्रेरणात्मक कहानियाँ, ब्रज में मैथिल ब्राह्मण कब कहाँ कैसे, खेड़ा आदि।

अप्रकाशित रचनायें–

लोकगीत संग्रह, कलयुगी महाभारत, राष्ट्रगीत, गीतमाला धनाक्षरी गीता, कोरोना चालीसा

समाजसेवा रचनायें–

संरक्षक मैथिल ब्राह्मण महासभा, मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका

साहित्यिक संस्था–

उद्घोष, उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद हरिगढ़ विभाग, राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा

सम्मान–

अनेक सामाजिक, साहित्यिक संस्थाओं द्वारा 20 सम्मान साहित्य संगम उदयपुर द्वारा साहित्य सुधाकर, साहित्य प्रदर्शन आगरा से साहित्य गौरव, गोविन्द प्रसाद भार्गव (राखी प्रकाशन) श्री चतुर्वेदी सम्मान हाथरस से ब्रज गौरव, त्रीनगर मैथिल गौरव, बम्बई से विद्यापति गौरव आदि।

विशेष–

फरवरी 2016 में मानव संसाधन मंत्रालय दिल्ली स्मृति ईरानी द्वारा असुर भयाउनि, दुर्गासप्तसती काव्यानुवाद को राखी प्रकाशन से खरीदकर, केन्द्रीय उच्च शिक्षा विभाग के माध्यम से डिग्री कॉलेजों में भेंट स्वरूप भेजा गया।